- जैसे ही डन्ठल पीली होती है वैसे ही पत्तियां एवं डन्ठलों को अलग कर लिया जाता है और प्रकन्दों को 20–25 दिन के लिए भूमि में छोड़ दिया जाता है।

कटाई पश्चात् प्रबन्धन

- कन्दों को बिना प्रकन्द के 4–6 सेमी लम्बे टुकड़ों में काटा जाता है।
- टुकड़ों को छायादार स्थान में सुखाया जाता है।
- सूखी हुई कंदों को ठड़े, सूखे और अंधेरे, हवा बन्द डिब्बों में भंडारित किया जाता है।

पैदावार

- पहले वर्ष में 4.5 – 5.0 टन/हेक्टेयर और दूसरे वर्ष में 11.5 – 12.0 टन/हेक्टेयर सूखे प्रकन्द प्राप्त किये जाते हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, **तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,**
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लॉन्ट जेनेटिक रिसोर्सेज, रिजनल स्टेशन शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा किया गया है।

कपूर कचरी की खेती

सामान्य नाम	:	कपूर कचरी
वानस्पतिक नाम	:	हेडिचियम स्पाइकेटम
कुल	:	ज़िनजीबरेयेसी
उपयोगी भाग	:	प्रकन्द और प्रकन्द का तेल
सामान्य उपयोग	:	प्रकन्द खुशबूदार, एसिडिक, कड़वी, तीखी, वाताहर, भूखवर्धक और उत्तेजक पौधा है। यह दमा, श्वासनली– शोथ, उल्टी, बदहजमी और सूजन में लाभदायक होती है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कपूर कचरी

हेडिचियम स्पाइकेटम
कुलः ज़िनजीबरेयेसी

- कपूर कचरी प्रकन्दमूलक खुशबूदार पत्तीवाली 1.5 मीटर लम्बा पौधा है।
- प्रकन्दें सफेद, रुखी और खुशबूदार होती हैं।
- इसकी छाल रुखी भूरी–लाल होती हैं।

जलवायु और मिट्टीः

- कपूर कचरी को समशीतोष्ण क्षेत्र में 1000 –1500 मीटर (समुद्र तल से) की ऊँचाई पर उगाया जा सकता है।

रोपण सामग्रीः

- बीज और प्रकन्द
- फसल के पकने के लिए प्रकन्द को कम से कम दो वर्ष का समय लगता है।

नर्सरी विधि

पौध तैयार करनाः

- 90 प्रतिशत अंकुरण करने के लिए बीजों को ठ़डे पानी में 24 घंटे भीगो कर रखना पड़ता है।
- प्रकन्द के खण्डों को क्यारियों में 10 सेमी X 20 सेमी की दूरी पर लगाया जाता है।
- रेत, एफवाईएम को समान भाग में गडढें में डाला जाता है और उसके बाद सिंचाई की जाती है।
- अप्रैल में नर्सरी को उगाया जाता है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- प्रति हेक्टयर भूमि के लिए 25 क्विंटल प्रकन्दों की आवश्यकता होती है।
- प्रकन्दों 0.01 प्रतिशत बेविष्ट के घोल में भीगोकर रखते हैं प्रकन्दों को छायादार स्थान पर छह से आठ घंटे सुखाते हैं।
- लगभग 64000 पौधे एक हेक्टयर जमीन के लिए आवश्यक होते हैं।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- सबसे पहले भूमि की निराई की जाती है फिर जुताई की जाती है और उसके बाद 15–20 दिन खुला छोड़ दिया जाता है।
- दूसरी जुताई के समय एक हेक्टेयर जमीन में 20 टन एफवाईएम खाद मिलाई जाती है।
- दूसरी व तीसरी जुताई के बाद भूमि को समतल बनाया जाता है।

पौधारोपण और अनुकूलतम दूरी

- निचले क्षेत्रों में अप्रैल में 45 सेमी X 30 सेमी की दूरी पर पौध को लगाया जाता है जबकि पहाड़ों में मई में इस पौधे को लगाया जाता है।
- पौधें की ऊँचाई 12–15 सेमी की होती है।

अंतर फसल प्रणालीः

- कपूर कचरी को फलों के बगीचों में बोया जा सकता है।

संवर्धन विधिः

- पशु खाद को 30–35 टन के हिसाब से तीन भागों में बाँटा जाता है।
- प्रति हेक्टयर 20 टन भूमि तैयार करते समय दो भाग 5–8 टन/हेक्टेयर मानसून से पहले मिट्टी में मिलाते हैं।
- पहली और दूसरी निराई प्रत्यारोपण के 45–50 दिन के बाद की जाती है।

सिंचाईः

- सर्दियों के दौरान में 15 से 20 दिन के अंतराल में हल्की सिंचाई करना पर्याप्त होता है।

निराईः

- पहली निराई सर्दी के मौसम में 15–20 दिनों में की जाती है।
- दूसरी और तीसरी निराई, पहली व दूसरी गुडाई के बाद की जाती है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाईः

- अक्टूबर– नवम्बर के दौरान दूसरी वर्षा ऋतु में फसल (प्रकन्दों का प्रयोग करते हुए) पक जाती है।